भारतीय परिप्रेक्ष्य में 'सामाजिक न्याय' का विकास

डॉ0 भागीरथी

सामाजिक न्याय की दृष्टि से विचार करें तो भारतीय परिदृश्य की तीन क्रांतियाँ महत्वपूर्ण हैं। पहला है छठीं शताब्दी ई0पू0 का धार्मिक क्रांति जिसके अगुआ भगवान बुद्ध और महावीर स्वामी थे। इन लोगों ने धर्म को आधार बनाकर सामाजिक विषमता को मिटाकर बंधुत्व के भाव को अपनाने पर बल दिया। दूसरा है मध्यकाल का भक्ति–आन्दोलन। इस आन्दोलन के द्वारा मध्यकालीन संतों ने सामाजिक असमानता से ग्रस्त समाज में एकता, बंधुत्व, प्रेम एवं मानव गरिमा को स्थापित करने का प्रयास किया। इन दोनों आन्दोलनों का सूत्र एक–दूसरे से वैचारिक एवं पारिस्थितिक रूप से जुड़ा हुआ है। तीसरी क्रान्ति 19वीं शताब्दी में हुई, जिसे हम 'भारतीय नवजागरण काल' के नाम से जानते हैं। नवजागरण काल में अनेक ऐसे समाज–सुधारक हुए जिन्होंने उन सामाजिक कुरीतियों पर प्रबल रूप से प्रहार किया जो सामाजिक न्याय के विकास में बाधक थे।